गांधी दर्शन में एकादश व्रत की अवधारणा

डॉ. रेखा पाण्डेय

एसो0 प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,
भगवानदीन आर्यकन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर–खीरी

सारांश :

महात्मा गांधी ने अपने जीवन और विचारधारा को नैतिकता, आत्मसंयम और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित किया। उन्होंने समाज और व्यक्ति के विकास के लिए 'एकादश व्रत' की अवधारणा प्रस्तुत की, जो सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर–श्रम, अस्वाद, भय–वर्जन, स्वदेशी, स्पर्श–भावना और सर्वधर्म समभाव पर आधारित है। ये व्रत गांधी के आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन के मूल स्तम्भ हैं, जिनका उद्देश्य आत्मशुद्धि और समाज सुधार था। गांधी का मानना था कि सत्य और अहिंसा सर्वोच्च नैतिक मूल्य हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों के उत्थान के लिए आवश्यक हैं। ब्रह्मचर्य और अस्तेय के माध्यम से व्यक्ति आत्मसंयम और ईमानदारी की ओर अग्रसर होता है, जबकि अपरिग्रह और शरीर–श्रम श्रम की गरिमा को बढ़ावा देते हैं। अस्वाद और भय–वर्जन आत्मनियंत्रण और निडरता की भावना विकसित करते हैं। स्वदेशी और स्पर्श–भावना आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि सर्वधर्म समभाव धार्मिक सहिष्णुता को बल प्रदान करता है। यद्यपि, गांधी के एकादश व्रत को लेकर कुछ आलोचनाएँ भी की गई। कुछ विचारकों का मानना है कि इन्हें व्यावहारिक जीवन में अपनाना कठिन हैं, विशेषकर आधुनिक आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में। ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे व्रतों को अत्यधिक कठोर बताया गया है, जबकि स्वदेशी की अवधारणा को वैश्वीकरण के दौर में अव्यावहारिक माना जाता है। फिर भी, गांधी के ये व्रत सम्बन्धी सिद्धांत नैतिकता, सामाजिक न्याय और आत्मशुद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और आज भी प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी, एकादश व्रत, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, स्वदेशी, सर्वधर्म समभाव, आत्मसंयम, सामाजिक न्याय

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता और महान विचारक थे, जिन्होंने अपने जीवन को सत्य, अहिंसा और नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित किया। उनके विचार न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित थे, बल्कि वे सामाजिक, धार्मिक और व्यक्तिगत जीवन के उच्च आदर्शों को भी समाहित करते थे। गांधी का मानना था कि केवल बाहरी स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है, बल्कि आंतरिक शुद्धता और नैतिक मूल्यों का पालन भी आवश्यक है। इसी विचारधारा के अन्तर्गत उन्होने 'एकादश व्रत' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसे वे अपने जीवन और सार्वजनिक गतिविधियों का अभिन्न अंग मानते थे।

गांधीजी ने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' जैसे अपने लेखों में इन व्रतों की महत्ता पर जोर दिया है। उन्होंने लिखा, 'मेरी धारणा है कि एक साधक के लिए ये व्रत उतने ही आवश्यक हैं, जितना जीवन के लिए वायु और जल।' गाँधी जी के बारे में कहा गया है कि वे न तो प्राचीन सिद्धान्तों की पुनरावृत्ति करते हैं और न ही नितान्त नये मत का प्रतिपादन करते हैं। ये प्राचीन मत को अर्वाचीन कलेवर देते हैं। इनका नैतिक सिद्धान्त परम्परागत आचार–दर्शन की युगानुरूप प्रस्तुति है। प्रस्तुति की नवीनता के कारण गाँधी का नैतिक दर्शन प्रभावोत्पादक है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये पंच महाव्रत गाँधी ने परम्परागत हिन्दू आचार–नीमांसा से तथा अन्य छः व्रतों को सन्त विनोबाभावे से ग्रहण किया है।[1]

एकादश व्रत की अवधारणा :

गांधी द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रत में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर–श्रम, अस्वाद, अभय, स्वदेशी, स्पर्श अस्पृश्यता और सर्वधर्म समभाव शामिल हैं। ये व्रत आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक माने गए हैं। गाँधीजी का मानना था कि इन व्रतों को पालन करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

1. सत्य :

गांधी के जीवन और दर्शन में सत्य का सर्वोच्च स्थान है। उनका मानना था कि 'ईश्वर ही सत्य है' और बाद में उन्होंने इसे परिवर्तित कर कहा 'सत्य ही ईश्वर है'।[2] सत्य केवल शब्दों में नहीं, बल्कि विचारों और कर्मों में भी होना चाहिए। उनके अनुसार, बिना सत्य के समाज में नैतिक मूल्यों का निर्माण असंभव है।

2. अहिंसा :

गांधी के विचारों का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ अहिंसा था। वे मानते थे कि अहिंसा हमारी जाति (मानव) का नियम है जैसे हिंसा पशुओं का।[3] अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने तक सीमित नहीं है, बल्कि विचारों, शब्दों और कर्मों में भी अहिंसा का पालन आवश्यक है। उन्होंने 'सत्याग्रह' की अवधारणा इसी आधार पर विकसित की। गांधीजी का मानना है केवल अहिंसा ही सत्य वस्तु है। अहिंसा के बिना सत्य का साक्षात्कार असम्भव है। अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है।[4] सत्य स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए निश्चय ही प्रेम या अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।[5] गांधीजी मानते हैं, 'अहिंसा कायरों का नहीं, बल्कि वीरों का हथियार है'

3. अस्तेय :

गांधी का कहना था कि चोरी केवल भौतिक वस्तुओं की ही नहीं होती, बल्कि किसी के समय, विचार[6] या श्रम का अनुचित लाभ उठाना भी अस्तेय का उल्लंघन है। अस्तेय के सम्बन्ध में गांधी को ईश उपनिषद् का प्रथम मंत्र अत्यन्त प्रिय रहा–

ईशावास्यमिदं सर्वं यतकिंच जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।[7]

अर्थात यह सारा जगत ईश्वर का है। इसलिए त्याग भाव एवं प्रभुभाव (समर्पण) से ही इसका उपभोग करना चाहिए।

4. अपरिग्रह :

गांधीजी का मानना था कि अधिक धन और संसाधनों का परिग्रह सामाजिक असमानता, अन्याय और शोषण को जन्म देता है। इसलिए, उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में त्याग और संतोष को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा, कि 'संपत्ति का अधिकार केवल उतना ही होना चाहिए, जितना मनुष्य की आवश्यकता हो। शेष सम्पत्ति को समाज कल्याण में लगा देना चाहिए। शोषण और अन्याय का अन्त करने के लिए अपरिग्रह की अत्यन्त आवश्यकता है।

5. ब्रह्मचर्य :

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल कामेच्छा से मुक्ति नहीं, बल्कि विचारों और कर्मों की शुद्धता भी है। गांधी का मानना था कि आत्मसंयम से ही व्यक्ति उच्च नैतिक मूल्यों को प्राप्त कर सकता है। अनके अनुसार, 'ब्रह्मचर्य आत्मशुद्धि का सबसे बड़ा साधन है'। इन्द्रिय, मन, बुद्धि को संयमित करना और उन्हे आत्मा के अनुशासन में रखने का निरन्तर अभ्यास करना ही ब्रह्मचर्य है।[8] 'ब्रह्मचर्य एक महाव्रत है, जिसके बिना मन की गांठ कसी नहीं जा सकती।'[9]

6. शरीर–श्रम :

गांधी ने शरीर–श्रम को आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का महत्वपूर्ण साधन माना। उनका मत था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने श्रम से आजीविका कमानी चाहिए। उन्होंने चरखे को इसका प्रतीक बनाया और इसे स्वदेशी आंदोलन से जोड़ा। गाँधी जी सभी को शारीरिक श्रम करने की सलाह देते थे। उनके अनुसार इससे सामाजिक समरता बढ़ेगी।

7. अस्वाद :

गांधीजी का मानना था कि इंद्रियों पर नियंत्रण न होने से व्यक्ति अपनी इच्छाओं का दास बन जाता है। अस्वाद व्रत का उद्देश्य इंद्रिय–नियंत्रण द्वारा जीवन में सादगी लाना था। गाँधी जी का कहना था कि रसना का नियंन्त्रण ब्रह्मचर्य के पालन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।[10]

8. अभय :

अभय का अर्थ है– बाहरी एवं भीतरी भय से मुक्ति। अभय का अर्थ है– साहस। भारत के भ्रमण के दौरान गांधी ने अनुभव किया कि सारा देश भय से आक्रान्त है। हम अपने विचारों को अपने ही लोगों के बीच में व्यक्त करने से डरते हैं। गांधी का परामर्श है कि हमें मात्र ईश्वर से डरना चाहिए। ईश्वर से डरने वाला व्यक्ति किसी से भयभीत नहीं हो सकता, चाहे वह कितना ही बलशाली क्यों न हो। ईश्वर भक्त या सत्यव्रती ही स्वभाव से निर्भय होता है।[11] अभय के बिना सत्याग्रह की गाड़ी एक कदम भी नहीं बढ़ सकती।[12]

गांधीजी ने कहा कि समाज में व्याप्त भय, अन्याय और दमन को समाप्त करना आवश्यक है। उनका मत था कि निडरता के बिना सत्य और अहिंसा की साधना संभव नहीं है।

9. स्वदेशी :

स्वदेशी व्रत केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है। गांधीजी ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और खादी के प्रचार को स्वदेशी का आधार बनाया। गांधी के विचार में ''खादी सामाजिक स्वदेशी की पहली सीढ़ी है। इस स्वदेशी धर्म की कोई परिसीमा नहीं है। ऐसे खादीधारी देखे गये है जो परदेशी समान भरे रहते हैं वे केवल स्वदेशी व्रत का घूम–घूम कर प्रदर्शन करते हैं। सच्चा स्वदेशी अपने पड़ोसी के हाथ का तैयार माल ही खरीदेगा, भले ही वह मंहगा हो और घटिया दर्जे का हो।''[13]

10. अस्पृश्यता :

गांधी ने अस्पृश्यता को सबसे बड़ा सामाजिक कलंक बताया। उन्होंने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए 'हरिजन आंदोलन' चलाया और समाज में समता की भावना विकसित करने का प्रयास किया। अस्पृश्यता के बारे में उनका मानना था कि ''वह उसने (हिन्दू धर्म) घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिन्दू धर्मी का परम कर्तव्य है।''[14]

11. सर्वधर्म समभाव :

गांधीजी का मानना था कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाने वाले मार्ग हैं। उन्होंने हिंदू–मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया और धार्मिक सौहार्द को स्थापित करने के लिए विभिन्न आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनका मानना था कि कोई भी धर्म बुरा नहीं होता, उसके अनुयायी बुरे हो सकते हैं। जिस धर्म में जो अच्छा हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। गाँधी जी स्वयं सभी धर्मों के प्रति समभाव रखते थे। उनके शब्दों में ''अन्य धर्मो के शास्त्रों की आलोचना करना या उनके दोषों को बताना मेरा काम नहीं हैं। अलबत्ता, यह मेरा विशेष अधिकार है और होना चाहिए कि उनमें जो सच्चाईयां हो उनकी मैं घोषणा करूँ और उन पर अमल करूँ।[15]

गांधी के एकादश व्रतों की वैचारिक पृष्ठभूमिः

महात्मा गांधी के एकादश व्रत उनकी आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक विचारधारा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक जीवन को भी दिशा प्रदान करते हैं। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (संपत्ति का लोभ न रखना), शरीर श्रम, अस्वाद (स्वाद का संयम), भय त्याग, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी और अस्पृश्यता निवारण जैसे व्रतों को अपनाकर अपने जीवन को उच्च नैतिक आदर्शों पर स्थापित किया। ये सभी व्रत उनके जीवन दर्शन के आधारभूत स्तंभ हैं और उनके सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता संग्राम में अहम्

भूमिका निभाते हैं।गांधी जी की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए उनके व्यक्तिगत अनुभवों और विभिन्न दार्शनिक एवं धार्मिक परंपराओं के प्रभावों को देखना आवश्यक है। उनका दर्शन भारतीय संस्कृति, भगवद गीता, जैन धर्म, बाइबिल, इस्लाम, बौद्ध धर्म और अन्य आध्यात्मिक विचारधाराओं से प्रभावित था। विशेष रूप से जैन धर्म की अहिंसा, वेदांत का आत्मसंयम, भगवद गीता का निष्काम कर्मयोग और बाइबिल की सेवा भावना ने उनके विचारों को गहराई से प्रभावित किया। यही कारण है कि उनके एकादश व्रत केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं थे, बल्कि वे एक सामाजिक और नैतिक क्रांति की दिशा में उठाए गए कदम थे।इन व्रतों का महत्व समाज में नैतिकता और आत्मशुद्धि के प्रसार से भी जुड़ा है। गांधी जी का मानना था कि आत्मसंयम और अनुशासन के बिना कोई भी व्यक्ति या समाज सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता। सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों ने उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन चलाने की प्रेरणा दी। ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से उन्होंने जीवन में संयम और सादगी को अपनाने पर बल दिया, जिससे भौतिक लालसाओं पर नियंत्रण किया जा सके। इसी प्रकार, स्वदेशी आंदोलन ने आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया और ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार कर भारतीय कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने में सहायता की।

एकादश व्रतों का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि ये व्यक्तिगत नैतिकता से जुड़े होने के बावजूद सामाजिक परिवर्तन के साधन भी बने। अस्पृश्यता निवारण से उन्होंने सामाजिक समानता और समरसता को बढ़ावा दिया, जबकि सर्वधर्म समभाव के माध्यम से धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे की भावना को सुदृढ़ किया। भय त्याग का व्रत न केवल व्यक्तिगत स्तर पर आत्मबल को विकसित करने के लिए था, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को किसी भी प्रकार के दमन के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा भी देता था।

आधुनिक संदर्भ में भी गांधी जी के ये व्रत अत्यंत प्रासंगिक हैं। उपभोक्तावाद और अनैतिकता से भरे समाज में गांधी जी के अपरिग्रह और अस्वाद जैसे सिद्धांतों को अपनाकर नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। वहीं, सत्य और अहिंसा के सिद्धांत आज भी सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।इस प्रकार, गांधी जी के एकादश व्रत केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधारों का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। ये सिद्धांत आज भी समाज में नैतिकता, आत्मसंयम और समरसता को स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

समाज और राजनीति पर एकादश व्रतों का प्रभावः

महात्मा गांधी के एकादश व्रत केवल व्यक्तिगत नैतिकता और आत्मसंयम के लिए नहीं थे, बल्कि वे व्यापक रूप से समाज और राजनीति में परिवर्तन लाने के महत्वपूर्ण साधन भी बने। उनके ये व्रत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार आंदोलनों और राजनीतिक मूल्यों को नैतिक दिशा देने में सहायक सिद्ध हुए। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, भय त्याग, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी और अस्पृश्यता निवारण जैसे व्रतों ने भारतीय समाज को आत्मनिरीक्षण करने और नैतिकता आधारित राजनीति को अपनाने की दिशा में प्रेरित किया।गांधी जी के इन व्रतों का सबसे बड़ा प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर पड़ा। सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नैतिक बल दिया, जिससे अहिंसक सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन जैसे प्रभावी संघर्षों की नींव रखी गई। इससे भारतीय समाज को यह समझने में मदद मिली कि राजनीतिक स्वतंत्रता केवल हिंसा के माध्यम से नहीं, बल्कि नैतिकता और आत्मबल से भी प्राप्त की जा सकती है। यही कारण है कि नागरिक अवज्ञा आंदोलन और दांडी मार्च जैसे आंदोलनों ने ब्रिटिश शासन को हिला दिया और वैश्विक स्तर पर एक नई अहिंसक क्रांति का उदाहरण प्रस्तुत किया।

समाज के संदर्भ में, एकादश व्रतों ने सामाजिक कुरीतियों और असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया। अस्पृश्यता निवारण का व्रत भारतीय समाज में जाति–आधारित भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। गांधी जी ने हरिजनों के उत्थान के लिए कई अभियान चलाए और समाज में समरसता स्थापित करने का प्रयास किया। सर्वधर्म समभाव के माध्यम से उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच सद्भाव और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया, जिससे सांप्रदायिकता को रोकने में सहायता मिली।अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से स्वदेशी व्रत अत्यंत प्रभावशाली रहा। गांधी जी का मानना था कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी है। उन्होंने ब्रिटिश वस्त्रों और उत्पादों के बहिष्कार के माध्यम से भारतीय कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। इस व्रत ने

न केवल आर्थिक स्वावलंबन को प्रोत्साहित किया, बल्कि आत्मनिर्भरता और स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देकर ग्रामीण भारत को मजबूत किया।राजनीतिक दृष्टि से, गांधी जी के व्रतों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ किया। भय त्याग और सत्य जैसे सिद्धांतों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को प्रेरित किया, बल्कि बाद में भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी नैतिकता पर आधारित बनाए रखने की सीख दी। गांधी जी का यह विचार था कि राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह नैतिक और सेवा–प्रधान होनी चाहिए। उनके विचारों का प्रभाव भारतीय संविधान और राजनीति पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।हालाँकि, वर्तमान समय में राजनीति में नैतिकता का ह्रास हुआ है और गांधी जी के व्रतों को भुला दिया गया है, फिर भी ये सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। यदि समाज और राजनीति में इन व्रतों को पुनः अपनाया जाए, तो भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, आर्थिक असमानता और अनैतिक आचरण जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। अतः, गांधी जी के एकादश व्रतों ने समाज और राजनीति को एक नैतिक दिशा दी, जिसका प्रभाव स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत तक देखा जा सकता है।

एकादश व्रतों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता :

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रत न केवल उनके समय में सामाजिक और राजनीतिक सुधारों का आधार बने, बल्कि आज भी उनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। आधुनिक युग में जब दुनिया तेजी से बदल रही है और समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा नैतिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है, तब गांधी जी के ये व्रत एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, भय त्याग, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी और अस्पृश्यता निवारण जैसे सिद्धांत आज भी सामाजिक समरसता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और नैतिक नेतृत्व की नींव मजबूत करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।आज के समय में ष्सत्यष् और ष्अहिंसाष् विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वैश्विक राजनीति, मीडिया और समाज में झूठ और हिंसा का प्रभाव बढ़ रहा है। राजनीतिक दल और शासक वर्ग प्रायः सत्ता के लिए असत्य का सहारा लेते हैं, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। गांधी जी का सत्य और अहिंसा का सिद्धांत हमें सिखाता है कि किसी भी परिवर्तन को नैतिकता और आत्मबल के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। नागरिक अधिकारों के संघर्ष, पर्यावरण आंदोलनों और सामाजिक न्याय के अभियानों में यह सिद्धांत आज भी प्रभावी रूप से देखा जाता है।

'स्वदेशी' का विचार आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में पुनः प्रासंगिक हो गया है। वैश्वीकरण ने जहाँ नए आर्थिक अवसर दिए हैं, वहीं यह स्थानीय उद्योगों और पारंपरिक व्यवसायों के लिए चुनौती भी बना है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, मेक इन इंडिया, और लोकल फॉर वोकल जैसी पहलें गांधी जी के स्वदेशी सिद्धांत को सशक्त कर रही हैं। यह विचार आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साथ–साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक हो सकता है, क्योंकि स्थानीय उत्पादन और उपभोग से कार्बन फुटप्रिंट कम किया जा सकता है।ष्अस्पृश्यता निवारणष् और ष्सर्वधर्म समभावष् जैसे व्रत भी वर्तमान सामाजिक संरचना में अत्यंत आवश्यक हैं। आधुनिक भारत में जातीय और धार्मिक आधार पर भेदभाव, सांप्रदायिक हिंसा और असमानता की समस्याएँ अब भी बनी हुई हैं। गांधी जी ने हरिजन आंदोलन के माध्यम से अस्पृश्यता को समाप्त करने की दिशा में प्रयास किए थे, लेकिन आज भी समाज में छुआछूत और जातिगत भेदभाव किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। सर्वधर्म समभाव की भावना को अपनाकर धार्मिक सौहार्द और सहिष्णुता को बढ़ाया जा सकता है, जिससे समाज में शांति और एकता बनी रहे।ष्भय त्यागष् का सिद्धांत आज के समय में व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में बहुत महत्व रखता है। आतंकवाद, असुरक्षा, बेरोजगारी और अन्य चुनौतियों के कारण लोगों में भय और अनिश्चितता बढ़ रही है। गांधी जी का यह व्रत हमें सिखाता है कि जीवन में निडरता और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।अंततः, गांधी जी के एकादश व्रतों की आधुनिक संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिकता है। यदि समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था में इन सिद्धांतों को अपनाया जाए, तो न केवल नैतिकता और पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि एक समतामूलक और न्यायसंगत समाज की स्थापना भी संभव होगी।

समीक्षात्मक विवेचन :

गांधी के एकादश व्रत उनके आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन व्रतों के माध्यम से वे नैतिक उत्थान और समाज सुधार की बात करते हैं। हालाँकि, इन व्रतों पर कई विचारकों ने आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है।

1. व्यावहारिक कठिनाइयाँ : कुछ विचारकों का मानना है कि गांधीजी के कुछ व्रत, जैसे ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, आधुनिक जीवन में अपनाना कठिन हैं। आज की उपभोक्तावादी

संस्कृति में अपरिग्रह को अपनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

2. आर्थिक दृष्टिकोण : स्वदेशी आंदोलन की आलोचना यह कहकर की जाती है कि वैश्वीकरण के दौर में आत्मनिर्भरता संभव नहीं है। कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि विदेशी निवेश और आधुनिक तकनीक को अपनाने से ही आर्थिक विकास संभव है।

3. राजनीतिक प्रासंगिकता : भय–वर्जन और सत्याग्रह की अवधारणा को कई बार अव्यावहारिक बताया गया है। कुछ राजनीतिक विचारकों का मत है कि केवल नैतिकता से शासन संभव नहीं, बल्कि व्यावहारिक निर्णय भी आवश्यक हैं।

4. सामाजिक संदर्भ : अस्पृश्यता उन्मूलन और सर्वधर्म समभाव की अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन आज भी जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। गांधी के विचारों को अपनाने के बावजूद इन मुद्दों को पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सका है।

निष्कर्ष :

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रत केवल व्यक्तिगत आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए नहीं थे, बल्कि उनका व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक उद्देश्य भी था। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, भय त्याग, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी और अस्पृश्यता निवारण जैसे सिद्धांतों का मूल उद्देश्य व्यक्ति और समाज को नैतिकता, आत्मनिर्भरता और सह–अस्तित्व की ओर प्रेरित करना था। गांधी जी का विश्वास था कि यदि व्यक्ति इन व्रतों को अपनाए, तो समाज और राष्ट्र में व्यापक रूप से शांति, सद्भाव और न्याय की स्थापना हो सकती है। समाज और राजनीति पर इन व्रतों के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधीवादी सिद्धांतों ने भारतीय जनमानस को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन चलाया, जिसने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, अस्पृश्यता निवारण और सर्वधर्म समभाव के उनके विचारों ने भारतीय समाज को अधिक समावेशी और सहिष्णु बनाने में योगदान दिया।आधुनिक संदर्भ में एकादश व्रतों की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है। वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, नैतिक मूल्यों के क्षरण और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं के समाधान के लिए गांधीवादी आदर्शों को पुनः अपनाने की आवश्यकता है। सत्य और अहिंसा आज भी राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों की प्रेरणा बने हुए हैं, वहीं स्वदेशी और अपरिग्रह जैसी अवधारणाएँ आत्मनिर्भरता और पर्यावरण–संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।अतः, गांधी के एकादश व्रत केवल ऐतिहासिक महत्व तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए भी एक प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इन सिद्धांतों को अपनाकर एक न्यायसंगत, नैतिक और समावेशी समाज की स्थापना संभव है।

संदर्भ सूची :

1. गांधी दर्शन के मूल बिन्दु, डा0 दुर्गादत्त पाण्डेय, पृ0 74

2. आत्मकथा, गांधी, 1929

3. महात्मा गांधी, 'यंग इण्डिया', अगस्त, 11, 1920

4. गांधी, 'गीतामाता'

5. महात्मा गांधी का दर्शन, धीरेन्द्र मोहन दत्त, पृ0 73

6. धर्म नीति, पृ0 140

7. ईश उपनिषद्, 1

8. राम नाम की महिमा, महात्मा गांधी पृ0 48

9. हिन्द–स्वराज, महात्मा गांधी, पृ0 76

10. वर्धा मन्दिर, पृ0 15

11. गांधी दर्शन के मूल बिन्दु, डा. दुर्गादत्त पाण्डेय, पृ0 89

12. हिन्द–स्वराज, महात्मा गांधी, पृ0 77

13. गांधी दर्शन के मूल बिन्दु, डा. दुर्गादत्त पाण्डेय, पृ0 92

14. धर्मनीति, पृ0 150

15. 'हरिजन', 13 मार्च 1937